11

''मसीह की कलीसियाएं''

''तुम को मसीह की सारी कलीसियाओं की ओर से नमस्कार'' (रोमियों 16:16)।

न्यायियों 11 अध्याय में यिप्तह ने अम्मोनियों के विरुद्ध एक निर्णायक युद्ध में अपनी टुकड़ियों की अगुआई की, परन्तु उसकी विजय कड़वी मिठास की तरह थी जिसमें प्रसन्नता की खुशी के साथ-साथ दुख के आंसुओं का रंग भी मिला हुआ था। उसका जश्न लड़ाई से पूर्व परमेश्वर के सामने की गई एक मन्नत को पूरा करने के लिए उसकी बेटी की बलि देने की आवश्यकता के कारण कम करना पड़ा। दुख की घड़ी में, उसे एप्रैमियों से झगड़ा करना पड़ा जिस कारण उसका अपने लोगों से भयंकर युद्ध हुआ (न्यायियों 12:1-7) जो पुराने नियम में वर्णित इस्राएल का पहला गृहयुद्ध है।

एप्रैमी लोगों का यिप्तह के योद्धाओं से कोई मुकाबला नहीं था। उसके आदमियों ने एप्रैम के इलाके के साथ लगती यरदन नदी को पार करने वालों को बड़ी कुशलता से हराकर उन्हें मार्ग में घेर लिया। एप्रैमी भगौड़ों को युद्ध के मैदान से भागने के समय गिरफ़्तार करने के लिए उनकी नाकाबन्दी के लिए मोर्चे लगा दिए गए।

यह जानते हुए कि उन मोर्चों पर रुकने वाला कोई भी एप्रैमी अपनी पहचान छुपाने के लिए अपने गोत्र के साथ सम्बन्ध का इन्कार करेगा, यिप्तह ने उनसे एक ऐसा प्रश्न पूछने का सुझाव दिया जिसका उज़र कोई भी एप्रैमी आसानी से नहीं दे सकता था। उसने अपने आदमियों को निर्देश दिया कि नाकाबंदी से गुज़रने वाले हर व्यक्ति से ''शिब्बोलेत'' बोलने को कहा जाए। अपनी पृष्ठभूमि और संस्कृति के कारण एप्रैमी ''श'' को ''स'' बोलते थे। बिना ध्यान दिए वे ''शिब्बोलेत'' की जगह ''सिब्बोलेत'' कह देते थे। यिप्तह की इस छोटी सी योजना से एप्रैमियों को आसानी से पहचान लिया गया और नदी किनारे 42 हज़ार एप्रैमी मार दिए गए थे।

इस्राएल के इतिहास की इस असामान्य घटना से एक शब्द के एक छोटे से उच्चारण का उदाहरण मिलता है जो दूर तक होने वाले प्रभाव यहां तक कि जीवन-मरण का कारण बन सकते हैं। कभी-कभी छोटे-छोटे शब्दों का अर्थ बहुत बड़ा होता है।

''छोटे के महत्व'' की इस सच्चाई को आइए अपने प्रभु और नये नियम के संदेश पर लागू करते हैं। क्योंकि पवित्र शास्त्र के शब्दों और वाक्यांशों में पूर्ण सच्चाई मिलती है,

इसलिए समर्पित शिष्य के लिए सावधानीपूर्वक जांच करनी आवश्यक है कि पवित्र शास्त्र ज़्या कहता है और कैसे कहता है।

हो सकता है कि पहले पवित्र शास्त्र का एक शज़्द अप्रकट लगे, किन्तु ईमानदारी से जांचने पर, हमें पता चल सकता है कि इसका अर्थ असाधारण है। उदाहरण के लिए, रोमियों 16:16 में ''मसीह की कलीसियाएं'' वाज़्यांश संदर्भ का केवल एक भाग लगता है, जिसका पवित्र शास्त्र में न कोई विशेष कार्य हो और न पाठक के लिए कोई वास्तविक संदेश, परन्तु इस वाज़्यांश का विश्लेषण करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि यह शज़्द महत्वपूर्ण है।

कोई कह सकता है, ''हम कलीसिया को किसी भी नाम से पुकारें इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। नाम और शीर्षक सब व्यर्थ हैं। महत्व इस बात का है कि आप ज़्या हैं न कि इसका कि आपको किस नाम से बुलाया जाता है।'' ज़्या यह सचमुच सही है? यिसह ने निश्चय ही यह बहस नहीं की होगी। वह जानता था कि किसी के बात करने के ढंग से उसकी पहचान हो जाती है। परमेश्वर ने चाहा कि हमारे नाम तथा जीवन दोनों से हमारी अलग पहचान हो। इसलिए, एक मसीही अपने आप को ''नास्तिक'' या ''मूर्तिपूजा करने वाला'' या कुछ और कहलाना पसन्द नहीं करेगा। हमारा हर अंग, यहां तक कि जो पदनाम हम अपने लिए इस्तेमाल करते हैं, यह ऐलान करने के लिए है कि हम मसीह के हैं।

पवित्र शास्त्र में कलीसिया को ''मसीह की कलीसिया'' ज़्यों कहा गया है? ज़्या इसमें कोई संदेह है? कलीसिया तो है ही मसीह की! वास्तव में यह व्याज़्यात्मक वाज़्यांश नये नियम की कलीसिया पर और प्रकाश डालता है। आइए ध्यान से इस पर विचार करके इसमें पाई जाने वाली सच्चाइयों की खोज करें।

एक आत्मिक वास्तविकता

पहले तो, इस पद से यह समझ आती है कि कलीसिया एक जीवित वास्तविकता अर्थात विद्यमान जीव है। इसमें पहले से यह मान लिया जाता है कि कलीसिया अब भविष्य में होने वाली कोई प्रतिज्ञा नहीं बल्कि एक वर्तमान वास्तविकता थी, जो अस्तित्व में है। पौलुस द्वारा रोमियों 16:16 के शज़्द लिखे जाने के समय, कलीसिया पूरे रोमी साम्राज्य में फैल रही थी, उस इलाके की मसीह की कलीसियाओं ने जहां से पौलुस लिख रहा था रोम में मसीह की कलीसियाओं के नाम सलाम भेजा।

मूसा के युग के लज़्बे वर्षों के दौरान, नबियों ने भविष्यवाणी की तज़्तियों के द्वारा ''अंत के दिनों'' के युग के आने की ओर ध्यान दिलाया था, जिसके आरज़्भ में परमेश्वर का राज्य स्थापित होना था (दानिय्येल 2:44)। आरज़्भ में, यीशु का प्रचार था कि समय पूरा हो गया: ''यूहन्ना के पकड़वाए जाने के बाद यीशु ने गलील में आकर परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार प्रचार किया। और कहा, समय पूरा हुआ है, और परमेश्वर का राज्य निकट आ गया है; मन फिराओ और सुसमाचार पर विश्वास करो'' (मरकुस 1:14, 15)। यीशु ने स्वर्ग के राज्य के इस आने को अपनी ''कलीसिया'' कहा और इसे बनाने की प्रतिज्ञा की (मज़ी 16:18)।

यीशु के स्वर्गारोहण के दिन प्रेरित उसकी बताई हुई बातों के आधार पर (प्रेरितों 1:4, 5) जानते थे कि नई शुरुआत शीघ्र ही होने वाली है। उन्होंने पूछा, ''हे प्रभु, क्या तू इसी समय इस्राएल का राज्य फेर देगा?'' (प्रेरितों 1:6)। यीशु ने उन्हें आश्वासन दिया, ''उन समयों या कालों को जानना जिनको पिता ने अपने ही अधिकार में रखा है, तुम्हारा काम नहीं। परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओगे'' (प्रेरितों 1:7, 8) स्वर्ग पर मसीह के उठा लिए जाने के दस दिन बाद, प्रभु ने प्रेरितों पर पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा बहाया (प्रेरितों 2:1-4)। उस दिन पतरस के संदेश के बाद, तीन हज़ार लोगों ने मसीह में बपतिस्मा लिया और प्रभु ने उन्हें अपनी कलीसिया में मिला लिया (प्रेरितों 2:41, 47)। परमेश्वर की प्रेरणा से दी गई भविष्यवाणी और यीशु की भविष्यवाणियों के पूरा होने के रूप में कलीसिया अस्तित्व में आ गई थी। नये नियम में प्रेरितों 2 अध्याय से आगे, कलीसिया को वर्तमान में ही बताया गया है। नये नियम में इसके बाद फिर कभी कलीसिया को भविष्य में आने वाली किसी वस्तु के रूप में नहीं दिखाया गया।

माना जाता है कि पौलुस ने रोमियों की अपनी पत्री कुरिन्थुस में 56 या 57 ई. के लगभग पूरी की। प्रेरितों के काम में दिए गए इतिहास के अनुसार, मसीह की कलीसियाएं पूरे अखया, यूनान और मकिदुनिया में स्थापित हो चुकी थीं। रोमियों की पुस्तक संकेत देती है कि रोम में बहुत सी कलीसियाएं स्थापित हो गई थीं। इन तथ्यों को ध्यान में रखते हुए पौलुस को इस पत्र की समाप्ति इस अभिवादन या सलाम के साथ कि ''तुम को मसीह की सारी कलीसियाओं की ओर से नमस्कार'' (रोमियों 16:16) करना उचित था।

जब मैं फार्म में खेलने वाला छोटा लड़का था, तो मेरा सबसे प्रिय सपना ऐसे घोड़े की सवारी करना था जो मेरा अपना हो। मेरे मित्रों के पास घोड़े थे, परन्तु मेरे पास नहीं था। जब मैं सोचता था कि काश मैं मित्रों के साथ मिलकर घुड़सवारी करता तो कितना अच्छा होता! यह सोचने पर मेरी इच्छा और भी तीव्र हो जाती। शीघ्र ही यह इच्छा मेरी सबसे बड़ी महत्वाकांक्षा बन गई। मुझे यह अहसास तो था कि मैं कितना गलत हूं, परन्तु यह सत्य है कि मेरा यही मानना था कि घोड़े के बिना जीवन कुछ नहीं है।

पैसे की तंगी के कारण मेरी यह इच्छा तेरह वर्ष का होने से पहले पूरी न हुई। हमारे पास एक बूढ़ा घोड़ा था जिसे फार्म में काम करने से हटा लिया गया था। एक पड़ोसी के पास दो साल का बछेरा था और वह हमारे पुराने घोड़े के साथ कुछ पैसे लेकर उस बछेरे को बदलना चाहता था। हमने उससे सौदा कर लिया और मैं एक प्रसन्न युवक बन गया, जो ऐसा लड़का था जिसकी कल्पना वास्तविकता बन गई थी।

मेरे जीवन के आनन्दमय क्षण की दिलचस्प बात यह है कि मैंने कभी भी अपने घोड़े का नाम नहीं रखा। अजीब लगता है न? हमने उसे कभी रैज़्स, या टॉर्च या किसी और नाम से नहीं पुकारा; सब उसे केवल ''ऍडी का घोड़ा'' ही कहते थे। मेरे लिए वह घोड़ा बहुत विशेष था। परन्तु किसी कारण मैंने उसे कभी नाम नहीं दिया। मैं अपने फार्म की पहाड़ियों पर घोड़े पर सवार होकर जाता और एक साल तो रोडियो परेड में भी ले गया लेकिन मैंने उसका नाम नहीं रखा। वह ''ऍडी का घोड़ा'' ही रहा।

''ऍडी का घोड़ा'' वाज़्यांश से बहुत स्पष्ट और अप्रभावशाली होने के बावजूद कुछ सच्चाइयों का पता चलता था। एक बात तो यह कि इस वाज़्यांश से यह पता चलता था कि वह घोड़ा किसका है।

इसी प्रकार, नये नियम की कलीसिया को नाम की आवश्यकता नहीं है। इसकी पहचान ''मसीह की कलीसियाएं,'' ''परमेश्वर की कलीसियाएं'' या केवल ''कलीसिया'' कहने से ही हो जाती है। वास्तव में कलीसिया को नाम देने का नये नियम में कोई अधिकार नहीं मिलता। हम समझ सकते हैं कि कलीसिया कहां इकट्ठी होती है, यह बता सकते हैं कि कलीसिया किसकी है, या कलीसिया किन लोगों से बनती है–परन्तु हमें कलीसिया को विशेष नाम देने का कोई अधिकार नहीं है। यीशु ने अपनी कलीसिया को नाम देना उचित नहीं समझा; उसने केवल इसे ''अपनी कलीसिया'' ही कहा (मत्ती 16:18)।

एक और बात के लिए, ''ऍडी का घोड़ा'' कहने से यह पता चलता था कि मेरी इच्छा पूरी हो गई अर्थात मुझे सचमुच एक घोड़ा मिल गया था। इसी प्रकार, ''मसीह की कलीसियाएं'' कहने से यह पता चलता है कि मसीह की कलीसिया है, और प्रभु की प्रतिज्ञा पूरी हो गई है। यह हमें ध्यान दिलाता है कि आज हम मसीह की कलीसिया के रूप में रह सकते हैं। यदि कलीसिया पहली सदी में थी, तो यह आज भी हो सकती है और भी है। परमेश्वर के राज्य की आशिषों का आनन्द पाने से पहले हमें परमेश्वर की प्रतिज्ञा के पूरा होने की प्रतीक्षा करने की आवश्यकता नहीं है। परमेश्वर के वचन की एकाग्रता पर दृढ़ आश्वासन के साथ, हम उद्धार के लिए प्रभु के मार्ग से उसके राज्य में प्रवेश कर सकते हैं और उसके राज्य के लोग बनकर रह सकते हैं।

आइए आज मसीह की कलीसिया के होने में आनन्दित हों। मुझे संसार को यह अद्‌भुत समाचार सुनाने दें कि मसीह की कलीसिया एक वास्तविकता है और किसी भी देश, धर्म या समाज का व्यक्ति जो मसीह को ग्रहण करता है, आनन्दित हो सकता है।

एक पवित्र बंधन

दूसरा, ''मसीह की कलीसियाएं'' पदनाम से मसीह और कलीसिया में पाए जाने वाले विशेष सज़्बन्ध का पता चलता है। कलीसिया विशेष तौर पर मसीह के अधीन है।

कलीसिया के सज़्बन्ध में नये नियम का मुज़्य विचार यह है कि इसे यीशु ने बनाया और यह उसी की है। उसे कलीसिया के *संस्थापक* के रूप में दिखाया गया है। उसने कहा, ''और मैं भी तुझ से कहता हूं, तू पतरस है। और मैं इस चट्टान पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा; और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे'' (मत्ती 16:18)। यीशु ने कलीसिया को किसी मनुष्य की नहीं बल्कि अपनी कलीसिया माना। उसे इसे अपना लहू देकर *खरीदने* वाले के रूप में दिखाया गया है। पौलुस ने इफिसुस के प्राचीनों को बताया कि वे ''परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली'' कर रहे थे ''जिसे उसने [अर्थात यीशु ने] अपने लोहू से मोल लिया है'' (प्रेरितों 20:28)। यीशु ने कलीसिया क्रूस पर अपनी बलिदानपूर्वक मृत्यु से बनाई। इसके अलावा, कलीसिया को इस पृथ्वी पर मसीह की *आत्मिक देह* के रूप

में दिखाया गया है। पौलुस ने लिखा है, ''ज़्योंकि जिस प्रकार देह तो एक है, और उसके अंग बहुत से हैं, और उस एक देह के सब अंग, बहुत होने पर भी सब मिलकर एक ही देह हैं, उसी प्रकार मसीह भी है'' (1 कुरिन्थियों 12:12)। ''इसी प्रकार तुम सब मिलकर मसीह की देह हो, और अलग-अलग उसके अंग हो'' (1 कुरिन्थियों 12:27)। मसीह कलीसिया का *सिर* है। पौलुस ने ही कहा, ''और वही देह, अर्थात कलीसिया का सिर है; वही आदि है और मरे हुओं में से जी उठने वालों में पहिलौठा कि सब बातों में वही प्रधान ठहरे'' (कुलुस्सियों 1:18)। छुटकारे के उसके बलिदान के स्वाभाविक परिणामस्वरूप, कलीसिया पृथ्वी पर मसीह के काम का *पूरा होना* ही है।

जब हम कलीसिया से मसीह के अलग-अलग सज़्बन्धों को ध्यान में रखते हैं, तो हमें हैरानी नहीं होती कि पौलुस कलीसिया को ''मसीह की कलीसिया'' कहता है। गहरे से गहरे सज़्भावित अर्थ में, कलीसिया मसीह *की* ही कलीसिया है। *न तो कलीसिया का प्रचार किए बिना मसीह का प्रचार हो सकता और न मसीह से उसका सज़्बन्ध बताए बिना सच्ची कलीसिया का।* मसीह से सचमुच में जुड़ने वाला व्यज़्ति उसकी कलीसिया बनकर ही उसकी सेवा करेगा। मसीह की सच्ची कलीसिया की पहचान और स्वभाव मसीह से ही मिलता है, और मसीह का सच्चा सेवक मसीह की कलीसिया होने के अलावा कुछ और बनना स्वीकार नहीं करेगा। कलीसिया न केवल मसीह की और उसके द्वारा चलाई जाती है बल्कि यह पृथ्वी पर उसकी आत्मिक देह भी है।

एक सफल व विश्वासी सुसमाचार प्रचारक, दिवंगत फोय एल. स्मिथ कलीसिया के मसीह की होने के सज़्बन्ध में एक बहुत अच्छा उदारहण देते थे। वह कहते थे, मान लो कि एक दिन सुबह-सुबह आपके घर की छत पर हथौड़ियों के शोर से आपकी नींद खुल जाती है। आप बिस्तर से बाहर निकल आते हैं, आपको अपने कानों पर विश्वास नहीं होता। यह सुनिश्चित करने के लिए कि आप कहीं नींद में तो नहीं हैं, आप आंखें मलते हुए सिर हिलाते हैं। फिर आपको पता चलता है कि आप नींद में नहीं बल्कि जाग रहे हैं। आप अपने आप से कहते हैं, ''लगता है जैसे छत पर कोई काम चल रहा है, लेकिन मैंने तो किसी को मरज़्मत करने के लिए नहीं कहा था! फिर मेरे घर की छत पर ठक-ठक की आवाज़ ज़्यों आ रही है?'' आप अपने आप को शीशे में देखते हैं कि आप सपना तो नहीं देख रहे हैं। आंखों से देखने पर आप घबरा तो जाते हैं परन्तु अब आपको यकीन हो गया है कि यह सपना नहीं बल्कि हकीकत है। जल्दी से यह देखने के लिए कि ऊपर ज़्या हो रहा है कोई कपड़ा लपेटकर आप बाहर निकलते हैं। बाहर निकलकर, आप छत की ओर देखते हैं। आप यह देखकर हैरान रह जाते हैं कि एक आदमी आपकी छत से एक ईंट निकाल रहा है। कांपते हुए शरीर से, आप यह कहने की हिज़्मत जुटाते हैं, ''भाई साहब, आप वहां ज़्या कर रहे हैं? मैंने तो आपको अपनी छत की मरज़्मत करने के लिए नहीं बुलाया था!'' आत्मविश्वास से भरा वह व्यज़्ति उज़र देता है, ''सर, मैं तकरीबन हर रोज आपके घर के सामने से गुजरता हूं। जब भी मैं यहां से गुजरता हूं, मैं इसे देखकर अपने आप से कहता हूं, 'मुझे इस घर की बनावट अच्छी नहीं लगती।' आज शनिवार था मेरे पास कुछ समय था, इसलिए मैंने ठान

लिया कि आज मैं अपनी इच्छा के मुताबिक आपके घर को सुधार दूंगा। मैं इस काम का या इस पर लगने वाली सामग्री या नये डिजाइन का आपसे एक कौड़ी भी नहीं लूंगा।''

आप इस आदमी से ज़्या कहेंगे? आप यही कहेंगे कि आपने यह घर उसे संतुष्ट करने के लिए नहीं बनाया है। आप उससे कहेंगे कि आपने इसे अपने परिवार की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए बनाया था, और यदि उसे आपका घर पसन्द नहीं है, तो ज़्यादा से ज़्यादा वह यही कर सकता है कि इधर न देखे। आप यह स्पष्ट कर देंगे कि इसे बदलने का उसे कोई हक नहीं है, ज़्योंकि यह उसका घर नहीं है कि वह जैसा चाहे उसे बदल दे।

बिना कलीसिया का प्रचार किए
मसीह का प्रचार नहीं हो सकता,
और न बिना मसीह का प्रचार किए
सच्ची कलीसिया का प्रचार हो सकता है।

ज़्या अपनी कलीसिया के सज़्बन्ध में मनुष्य से प्रभु को ऐसा ही जवाब नहीं मिला है? मनुष्य ने कहा है, ''प्रभु, जो ढांचा आपने कलीसिया के लिए बनाया है मुझे वह पसन्द नहीं है। मैं इसे बदल रहा हूं।'' अज़्खड़ धार्मिक लोगों ने प्रभु की कलीसिया को मनुष्य के संस्थान के रूप में अपनी मर्ज़ी से ही बदल दिया है। परन्तु सच्चाई यह है कि जैसे हमारे अपने घर केवल हमारे ही होते हैं, वैसे ही कलीसिया मसीह की ही है। किसी व्यज़्ति या संगठन को इसमें किसी प्रकार का परिवर्तन करने का अधिकार नहीं है। यह तो केवल मसीह *की* कलीसिया है।

प्रभु की कलीसिया के सज़्बन्ध में किसी का कोई भी तर्क मसीह को बताया जाना चाहिए, ज़्योंकि कलीसिया उसके स्वामित्व तथा अधिकार में है। वह इसका सिर है, और अपनी पसन्द के अनुसार इसकी योजना बनाना और चलाना उस पर निर्भर करता है।

आइए मसीह की कलीसिया के रूप में हम उसके साथ अपने विशेष सज़्बन्ध को स्वीकार करें। उसकी देह के रूप में, हम उसकी इच्छा को पूरा करने के लिए तैयार रहते हैं। हमारे लिए पौलुस के शज़्द उतने ही प्रासंगिक हैं: ''अब मैं ज़्या मनुष्यों को मनाता हूं या परमेश्वर को? ज़्या मैं मनुष्यों को प्रसन्न करना चाहता हूं? यदि मैं अब तक मनुष्यों को प्रसन्न करता रहता, तो मसीह का दास न होता'' (गलातियों 1:10)।

बाइबल का हवाला

तीसरा, ''मसीह की कलीसियाएं'' वाज़्यांश से पवित्र शास्त्र में कलीसिया की पहचान के एक ढंग का पता चलता है। आत्मा की अगुआई से, पौलुस ने कलीसिया को मसीह की कलीसिया के रूप में वर्णित किया।

संसार में यीशु की कलीसिया का आना एक ऐतिहासिक घटना थी, जिसकी राह पुराना नियम से लेकर नये नियम का पहला भाग (सुसमाचार की चार पुस्तकें) देखते थे। पुराने

नियम और नये नियम के प्रारज़्भिक भाग में से परमेश्वर की योजना को समझने वाला कोई भी व्यज़्ति इस घटना पर अधिक बल दिए जाने पर अपने आप को यह कहने से रोक नहीं पाएगा, ''कलीसिया के आने पर नये नियम के लेखक इसे ज़्या कहेंगे ? वे इसके लिए किन पदनामों का इस्तेमाल करेंगे ?''

अध्ययन जारी रखते हुए, हमें पता चलता है कि कई पदों तथा विवरणों का इस्तेमाल किया गया है। यह ''परमेश्वर की कलीसिया'' (1 कुरिन्थियों 1:2) या ''परमेश्वर की कलीसियाएं'' (1 थिस्सलुनीकियों 2:14) है; यह ''पहलौठे की कलीसिया'' है (इब्रानियों 12:23); ''पवित्र लोगों की कलीसियाएं'' है (1 कुरिन्थियों 14:33)। इसे केवल ''कलीसिया'' (इफिसियों 1:22) या किसी स्थानीय कलीसिया के रूप में, जैसे ''आसिया की कलीसियाएं'' (1 कुरिन्थियों 16:19) के रूप में भी लिखा गया है।[1]

पवित्र आत्मा द्वारा नये नियम की कलीसिया को कोई नाम नहीं दिया गया है। पवित्र शास्त्र में आपको कभी माउंट कलवरी चर्च, ज़ियोन चर्च ऑफ़ रिडेज़्पटिव ग्रेस, द चर्च ऑफ़ द होली घोस्ट आदि पढ़ने को नहीं मिलेगा। इसे इसको बनाने वाले, इसमें रहने वाले लोगों के अनुसार बनाया गया है, परन्तु इसे कभी नाम नहीं दिया गया।

पवित्र शास्त्र में दिखाए ''कलीसिया'' की सादगी के सुन्दर ढंग से हम चकित रह जाते हैं। नये नियम के समय में, या तो कोई इस में होता था या इससे बाहर अर्थात या तो कोई कलीसिया में होता था या संसार में। आज साज़्प्रदायिक कलीसियाओं की बहुतायत के कारण, जिनके नियम और नाम मनुष्यों द्वारा बनाए गए हैं, धार्मिक जगत द्वारा अविश्वासी व्यज़्ति के सामने आने वाली तस्वीर बहुत ही गड़बड़ करने वाली है जिससे अच्छे से अच्छे और समझदार लोग भी उलझन में पड़ जाते हैं। संसार भर में साज़्प्रदायिक कलीसियाओं के प्रभाव तथा उपस्थिति के बावजूद नये नियम की कलीसिया अर्थात जिस कलीसिया को यीशु ने बनाया था उसकी एकाग्रता, सादगी तथा सुन्दरता को बिगाड़ नहीं पाए । हर मसीही से नये नियम के मसीही अर्थात नये नियम की कलीसिया के मसीही बनना, मसीह और केवल उसके वचन से अर्थात नये नियम में विश्वास रखना है।

कलीसिया के लिए नये नियम की पहचान का एक चिह्न लेकर उसे एक गुट के रूप में अपने आप को नाम देना और उन दूसरी सभी बातों को पीछे करना या निकाल देना जो नये नियम में दी गई हैं, गलत होगा। नये नियम की सच्ची कलीसिया की पहचान नये नियम में दिए गए सभी पदनामों और विवरणों से होनी चाहिए। हर अभिव्यज़्ति हमें और गहराई से समझाती है कि कलीसिया ज़्या है, किसकी है, या इसमें कौन लोग हैं। हर पद का महत्व है और कलीसिया के लिए उसका इस्तेमाल आवश्यक है, लेकिन यह ज़रूरी है कि उनका इस्तेमाल वैसे ही किया जाए जैसे नये नियम में किया गया है। कलीसिया के सज़्बन्ध में धार्मिक जगत में सबसे बड़ी उलझन के दो कारण कलीसिया के नाम का इस्तेमाल जो नये नियम में नहीं है और कलीसिया के लिए नये नियम के पदनामों का गलत इस्तेमाल है।

एक डिनोमिनेशन की कहानी बताई जाती है जो नये नियम को मानने का दावा तो करती थी परन्तु इसका कोई वास्तविक प्रमाण नहीं देती थी। वे लोग अपने प्रार्थना भवन के

सामने एक नया बोर्ड लगा रहे थे। नये नियम का एक मसीही उनके एक सदस्य से बात कर रहा था, और उसने उसे कहा, ''मैं देखता हूं कि आप लोग अपनी बिल्डिंग के सामने एक नया बोर्ड लगा रहे हैं।'' उस सदस्य ने कहा, ''हां, हमें इस पर बड़ा गर्व होगा।'' मसीही व्यक्ति ने कहा, ''आपके बोर्ड में आने वाले खर्च में पचास डॉलर मैं भी डाल दूंगा यदि आप अपने बोर्ड पर अपनी डिनोमिनेशन के नाम के बजाय यह लिख दें कि 'यह मसीह की कलीसिया है।' '' सदस्य ने कहा, ''नहीं नहीं! हम ऐसा नहीं कर सकते! हमें अपने बोर्ड पर अपनी डिनोमिनेशन का नाम ही लिखना है।'' तब असाम्प्रदायिक मसीही व्यक्ति ने कहा, ''अच्छा ठीक है। आपके बोर्ड के खर्च में मैं पचास डॉलर का योगदान दूंगा यदि आप अपने बोर्ड के शब्दों में यह जोड़ दें कि 'यह मसीह की कलीसिया नहीं है।' '' उस सदस्य ने कहा, ''हम ऐसा नहीं कर सकते; हम तो मसीह की कलीसिया हैं!''

यह छोटी सी कहानी सच्ची लगती है। क्या यह अजीब नहीं है कि कोई गुट मसीह की कलीसिया होने का दावा तो करे परन्तु अपने बोर्ड पर इसे लिखना न चाहे और इसके बजाय अपनी डिनोमिनेशन का नाम लिखने को प्राथमिकता दे? हमारी वफ़ादारी से यह पता चलेगा कि हम किस नाम या पदनाम को चुनना पसन्द करते हैं।

अब्राहम लिंकन ने एक बार किसी आदमी से पूछा, ''यदि हम बछड़े की पूंछ को टांग मान लें तो उस बछड़े की कितनी टांगें हो जाएंगी?'' आदमी ने झट से उत्तर दिया, ''उसकी पांच टांगें हो जाएंगी!'' लिंकन का जवाब था, ''नहीं। बछड़े की केवल चार ही टांगें होंगी। पूंछ को टांग कहने से वह टांग नहीं बन जाएगी!'' इस कथन की सच्चाई बिल्कुल सही है। यह तथ्य कि कोई ग्रुप अपने आप को मसीह की कलीसिया कहता है, अपने आप में यह प्रमाणित नहीं करता कि वे लोग मसीह की कलीसिया हैं। परन्तु एक और विचार पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए: यदि हम सचमुच मसीह की कलीसिया होना चाहते हैं, तो हमें अपने आप को वही कहलाना भी चाहिए। *जिस प्रकार हम अपने आप को वह नहीं कहला सकते जो हम नहीं हैं वैसे ही अपने आप को वह कहलाने से इन्कार करना जो हम हैं, गलत होगा।*

पिछले समय में धार्मिक जगत को ईमानदारी से नये नियम की कलीसिया के रूप में मसीह और केवल उसके वचन के प्रति वफादारी दिखाना आवश्यक नहीं था। यदि हमारे धार्मिक संसार की कलीसियाएं केवल ''कलीसिया'' और मसीही लोग केवल मसीही बन जाएं तो धार्मिक उलझन सूर्य चढ़ने से पहले होने वाली धुंध और सुबह होने से पहले वाले अंधेरे की तरह छूमंतर हो जाएगी। किसी प्रकार की कोई शर्त नहीं मानी जाएगी; केवल मसीह और उसके वचन के प्रति हमारे मन और सेवा होगी–इसका अर्थ चाहे जो भी हो, यह चाहे कहीं भी ले जाए और इसका दाम चाहे कुछ भी हो।

सारांश

''मसीह की कलीसियाएं'' शब्द, यद्यपि छोटा और अनाकर्षक लगता है, परन्तु इसमें सुनने वाले हर किसी के लिए एक जबरदस्त संदेश है। तात्पर्य यह है कि यह कलीसिया के बारे में महत्वपूर्ण सच्चाइयों की घोषणा करता है। पहली बात कि यह कलीसिया की

वास्तविकता को प्रकट करता है। पौलुस द्वारा रोमियों की पत्री लिखने तक, मसीह की बहुत सी कलीसियाएं संसार के मानचित्र पर आ चुकी थीं। दूसरा, इससे कलीसिया और मसीह के बीच के सज़्बन्ध का पता चलता है। कलीसिया मसीह *की* ही कलीसिया है। यह उसी की है, और उसकी आत्मिक देह के रूप में काम करती है। तीसरा, इस वाज़्यांश से पता चलता है कि पौलुस के दिनों में नये नियम में कलीसिया को कैसे जाना जाता था।

हमारे प्रभु के पकड़वाए जाने की रात, पतरस एकत्र हुई भीड़ के साथ आंगन में प्रतीक्षा कर रहा था। दरवाजे पर जाते हुए, उससे किसी ने पूछा था, ''मैं तुझे जीवते परमेश्वर की शपथ देता हूं, कि तू परमेश्वर का पुत्र मसीह है, तो हम से कह दे'' (मज़ी 26:73)। लगता है कि पतरस ने भीड़ के साथ प्रतीक्षा करते हुए दूसरों से कुछ अधिक नहीं कहा था; परन्तु कम से कम पास खड़े किसी व्यज़्ति के अनुसार, उसने यीशु के अनुयायियों के साथ अपनी पहचान बताने के लिए काफी कुछ कह दिया था। इस घटना में कुछ शज़्दों से ही उसकी पहचान पता चल गई थी।

''मसीह की कलीसियाएं'' ये तीन शज़्द इस बात से हमारी आंखें खोलकर कि कलीसिया ज़्या है और हमारी वफ़ादारी और प्रेम का उपयुज़्त केन्द्र ज़्या होना चाहिए, मसीही लोगों की सच्ची पहचान बताते हैं। कलीसिया मसीह की सज़्पज़ि या उसकी आत्मिक देह है।

किसी कलीसिया के लिए उचित ढंग से ''मसीह की कलीसिया'' कहलाने से बढ़कर सज़्मान नहीं दिया जा सकता। मसीही लोगों के किसी समूह द्वारा अपने आप को मसीह की कलीसियाएं कहलवाने की महत्वाकांक्षा से बढ़कर कोई मसला नहीं हो सकता। विन्सटन चर्चिल ने कहा था, ''किसी में गुण पैदा करने का सबसे अच्छा ढंग उसमें वह गुण डाल देना है।'' जब हम अपने आप को मसीह की कलीसिया कहते हैं तो हम सब लोगों के देखने के लिए यह स्पष्ट कर रहे होते हैं कि हमने ज़्या होना और ज़्या बनना चुना है।

यह जानकर कि मसीह कौन है, आप उसकी बनाई और उसके स्वामित्व वाली कलीसिया के भाग होने की इच्छा करेंगे। ज़्या आपके हृदय पर कोई बोर्ड है जिस पर ''मसीह की कलीसिया'' लिखा हो?

पाद टिप्पणी

[1]अन्य स्थान जिनके साथ ''कलीसियाएं'' मिलता है वे हैं ''गलातिया की कलीसियाओं'' (1 कुरिन्थियों 16:1; गलतियों 1:2), ''यहूदिया की कलीसियाओं'' (गलतियों 1:22), ''लौदीकिया की कलीसिया'' (कुलुस्सियों 4:16) और ''थिस्सलुनीकियों की कलीसिया'' (1 थिस्सलुनीकियों 1:1)।

अध्ययन व चर्चा के लिए प्रश्न

1. ''शिज़्बोलेत'' से किसी एप्रैमी की पहचान कैसे होती थी?
2. कलीसिया की स्थापना कब हुई थी?
3. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने कलीसिया को ज़्या कहा था?
4. कलीसिया से मसीह के अलग-अलग सज़्बन्ध बताएं। हर सज़्बन्ध के लिए पवित्र शास्त्र से प्रमाण दें।
5. साबित करें कि कलीसिया मसीह की ही है।
6. नये नियम में कलीसिया को ज़्या कहा गया है?
7. ज़्या नये नियम में कलीसिया को कोई नाम दिया गया है?
8. संक्षेप में बताएं कि आज नये नियम की कलीसिया के सज़्बन्ध में किस प्रतिबद्धता की आवश्यकता है।
9. आज किसी कलीसिया को सबसे बड़ा सज़्मान ज़्या मिल सकता है?
10. यीशु के पकड़वाए जाने की रात में पतरस की पहचान कैसे हुई थी?